भजन

(1)

श्री शान्ति गुरु के चरणों में, मैं नित उठ शीश नमाता हूँ।
मेरे मन की कली खिल जाती है, जब दर्श गुरु के पाता हूँ।।

(2)

मुझे शांति नाम ही प्यारा है, इस ही का मुझे सहारा है।
इस नाम में ऐसी बरकत है, जो चाहता हूँ सो पाता हूँ।।

(3)

जब याद तेरे गुण आते हैं, दुःख दर्द सभी मिट जाते हैं।
मैं बनकर मस्त दिवाना फिर, बस गीत तेरे ही गाता हूँ।।

(4)

गुरु राज तपस्वी महायोगी, सिर ताज हो तुम महाराजों के।
मैं एक छोटा सा सेवक हूँ, कुछ कहता हुआ शरमाता हूँ।।

(5)

गुरु चरणों में अर्ज यही, बढ़ती दिन रात रहे भक्ति।
मेरा मानुष जन्म सफल होवे, यही भक्ति का फल चाहता हूँ।।
श्री शान्ति गुरु के चरणों में, मैं नित उठ शीश नमाता हूँ।।

गुरुदेव की आरती

(1)

नमोअर्हंत सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्य:

ॐ जय-जय गुरु देवा स्वामी जय जय गुरु देवा आरती करूं सद्गुरु नी आरती करूँ म्हारा प्रभुनी चरण कमल सेवा

ॐ जय जय गुरु देवा॥

चित्त चन्दन जल शब्दे प्रेम तणा पुष्पे हो स्वामी प्रेम तणा पुष्पे, ज्ञान गुलाल अबीलशील धीरज ना धूपे स्वामी धीरज ना धूपे

ॐ जय जय गुरु देवा॥

दीपक अविचल नामे अक्षत अनुभवना हो स्वामी अक्षत अनुभवना, कर्पुर आरती करूणा-2 लग रही गुरु जपना

ॐ जय जय गुरु देवा॥

नथी इच्छा अन्तरमां कांई लेवा के देवा हो स्वामी लेवा के देवा भजन गुरु प्रतापे-2 मांगू नित सेवा

ॐ जय जय गुरु देवा॥

बहु इच्छा अन्तरमां निशदिन गुरु वंदन करवा हो स्वामी सूरी दर्शन करवा

धन्य धन्य अहो भाग्य आज दिन पाम्यां गुरु सेवा

ॐ जय जय गुरु देवा॥

आरती सद्गुरु केरी जे कोई गावे, हो स्वामी जे कोई गावे भावधरी सेवक कहे प्रेमधरी बालक कहे, शांति थइ जासे ॐ शांति थइ जासे:-2, ॐजय:जय: गुरुदेवा-2 आरती करूं सद्गुरु नी आरती करुं म्हारा प्रभुनी चरण कमल सेवा:।

ॐ जय जय गुरु देवा॥

(2)

मैं नाथ के ध्यान को धर के गुरु गुरु बोलूं रे।
मैं सुन्दर भाव को भजकर अन्तर खोलूं रे॥
मैं गुरु भक्ति में चित्त को लगा कर डोलूं रे।
मैं दास चरन का बन कर कर्म को तोड़ूं रे॥

सद् गुरु देव की जय
जगत गुरु देव ने घणी खम्मा।

(3)

सम्राट सूरी गुरुराज तुम तो प्रेम के अवतार हो।
शांत सूरत शांत मूरत, शांति के अवतार हो॥

संकट हरन सुख के करन, गुरु शांति के दातार हो।
गुरु शरण में आ पड़ा हूं, आपका आधार हो॥

कर्म की आंधी भयानक, भंवर में नैया पड़ी।
थामलो पतवार हो गुरु आप खैवन हार हो॥

भिखारी आपकी कृपा का, और दर्शन का मैं।
आपके दर्शन मुझे हर घड़ी बारम्बार हो॥

की अर्ज बालक ने रोकर, गुरुराज के चरणों में यह।
लेखना निष्फल न मेरे, आंसुओं की धार हो॥

सम्राट सूरी गुरुराज तुम तो प्रेम के अवतार हो॥

(4)

अब तो यह जीवन अर्पण है, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, भगवान तुम्हारे चरणों में॥
अब तो.....

प्रभु जन्म जन्म से मैं तेरा, गुरु तुम पद पंकज का चेरा।
न्यौछावर है यह तन, मन, धन, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में॥
अब तो.....

नहीं चाह और अब रहे मन में, नहीं ध्यान और कोई स्वप्नों में
दिल लगा रहे हरदम मेरा, भगवान तुम्हारे चरणों में॥
अब तो.....

मन मन्दिर में गुरु आप रहो अन्धकार में ज्ञान प्रकाश करो।
स्वासों के स्वर झनकार रहे भगवान तुम्हारे चरणों में॥
अब तो.....

मेरी नैया को गुरु तुम पार करो, मेरा जन्म मरण से उद्धार करो।
यह भक्तों की अर्ज स्वीकार करो, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में॥
अब तो.....

(5)

शांति सूरीश्वर पूर्ण योगीश्वर आबू बसैया तुम्हीं तो हो।
शांति सूरीश्वर पूर्ण योगीश्वर शांति देवैया तुम्हीं तो हो॥
पूर्ण योगीश्वर ध्यान धरेश्वर, ध्यान धरैया तुम्हीं तो हो।
रंक राजेश्वर आवे दर्शन को, दर्श देवैया तुम्हीं तो हो॥
सब के पुज्येश्वर शांति के सागर, शांति देवैया तुम्हीं तो हो।
दुःख हरेश्वर कष्ट टालेश्वर कष्ट मिटैया तुम्हीं तो हो।
अभयदान शरणागत मांगे शरण देवैया तुम्हीं तो हो।
दास मानक भव सागर डोले पार लगैया तुम्हीं तो हो॥
शांति सूरीश्वर पूर्ण योगीश्वर आबू बसैया तुम्हीं तो हो।

(6)

माता वसुदवी ना बाल गुरु श्री शांति सूरी भगवान
पिता-तोलाजी के नंद, गुरु श्री शांति सूरी भगवान
इन्द्र इन्द्राणी आवे गुरु ने पालणिये हुलरावे,
गुरुसा रा आनन्द मंगल गावे-गुरु श्री शांति सूरी भगवान
गुरु ने पालणिये हुलरावे ॥
देव देवियां आवे गुरु ने मोतीड़े बधावे
गुरुसा ने घूघरिये घमकावे-गुरु श्री शांति सूरी भगवान
गुरु ने पालणिये हुलरावे ॥
सुन्दर बैनी आवे रुड़ा आभूषण कई लावे
माला मोतियन की पहरावे-गुरु श्री शांति सूरी भगवान
गुरु ने पालणिये हुलरावे ॥
भक्त मंडली आवे गुरुसा रा गुणगान कई गावे
गुरुसा ने नाच करी रींझावे-गुरु श्री शांति सूरी भगवान

(7)

ॐ गुरु ॐ गुरु ॐ गुरुदेव
जय गुरु जय गुरु जय गुरुदेव

शांति गुरु है तेरा नाम, सबको शांति दो भगवान।ॐगुरु
पतित पावन दीन दयाल, सबके तुम्हीं हो रखवाला।ॐगुरु
आत्म उद्धारक तेरा नाम, सबको शांति दो भगवान।ॐगुरु
सुख करता है श्री गुरुदेव दुःख हरता है जय गुरुदेव।ॐगुरु

सद्गुरु देव की जय
जगत गुरु देव ने घणी खम्मा

मंगल दीपक

(1)

नमो अर्हंत सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यः।
मंगल दीपक गुरु का कीजे, मन वांछित फल कारज सीजे।
मंगल दीप मंगल अरु भाषे
घर घर मंगल भाव प्रकाशे॥ मंगल दीपक॥
करे करावे मंगल माला
अन्न धन लक्ष्मी लहे सु विशाला॥मंगल दीपक॥
हरे विघन हर मंगल दीवो
रिधीसार भवियण चिरंजीवो॥मंगल दीपक॥

(2)

दीवो रे दीवो प्रभु मंगलिक दीवो
आरती उतारण भवि चिरंजीवो॥
सोहामणु घर पर्व दिवाली, अम्बर खेले अमरावाली
दिपाल भणे एने कुल अजुवाली भावे भक्ति विघननिवारी
दिपाल भणे एणे कलि काले
आरती उतारे राजा कुमारपाले
अम घर मंगलिक तुम घर मंगलिक
मंगलिक चतुर्विध संघ ने होईजो॥दीवो रे दीवो॥

(3)

जय देव गुरु जय देव
जय मंगल मुरति हो स्वामी जय मंगल मुरति
भक्त जनों के कारण प्रगटी सुख मूर्ति॥
जय देव गुरु जय देव
पतित पावन प्रभुजी पूर्ण परमात्मा, हो स्वामी पूर्ण परमात्मा

भक्त वत्सल भगवाना–2 गुरु गुण गाना

जय देव गुरु जय देव ॥

दुःख हरता सुख करता तापत्रये हरता हो प्रभु तापत्रये हरता
उपदेशामृत दाता जीव सकल त्राता

जय देव गुरु जय देव ॥

निगमागम पुकारे गुरु थी ज्ञान मिले, हो स्वामी गुरु थी ज्ञान मिले, भवसिंधुमा सगला समूला कष्ट टले

जय देव गुरु जय देव ॥

आधि व्याधि उपाधि अन्तरमा उछले हो स्वामी अन्तरमा उछले, सर्वे शीघ्र गुरुना प्रबल प्रताप टले

जय देव गुरु जय देव ॥

सकल मनोरथ साधे श्री गुरु शरण रही, प्रभु श्री गुरु शरण रही, चारों पदार्थ पामें संशय तेमं नहीं

जय देव गुरु जय देव ॥

जन्मोजन्मना दुरितो जल्दी जाओ वहीं हो प्रभु जल्दी जाओ वहीं, भक्त मंडल गुण गावे

दास किशन चन्द गावे गुरुना चरण ग्रही—

जय देव गुरु जय देव
जय मंगल मुरती2 ॥

सद् गुरु देव की जय
जगत् गुरु देव ने घणी खम्मा।

(4)

ॐशांति शांति सब मिल शांति कहो विश्वसेन अचिराजी के नंदा, सुमरन हैं सब दुख निकंदा आवो प्रातः/संध्या वंदन हो सब मिल शांति कहो—

भीतर शांति, बाहर शांति, मुझ में शांति, तुझ में शांति सब में शांति बसावो, सब मिल शांति कहो.....

(5)

हे दयामय दीन बंधु प्रार्थना सुन लीजिये

मंगलम् भगवान वीरो
मंगलम् गौतम प्रभु
मंगलम् स्थूली भद्राद्या
जैन धर्मोस्तु मंगलम्

हे भगवान हमारे भाव मंगल हो, हमारी भाषा मंगल हो हमारे कार्य मंगल हो, हम मंगल करें, मंगल सुनें मंगल देखें सब मंगल हो—3

(6)

ॐकांर बिन्दु संयुक्तम् नित्यम् ध्यायन्ती योगिनः कामदः मोक्षदम्: चेव ॐकांराय नमो नमः (3 दफा)

ॐसत्तचित आनन्द रूप ज्योति स्वरूप
चिद्घनान्द रूप पूर्ण ब्रह्म परमात्मा (3 दफा)
सब का भलाकर (3 दफा)

ॐसत्चित आनन्द रूप ज्योति स्वरूप चिद्घनान्द रूप पूर्ण ब्रह्म परमात्मा- (3 दफा बोलना)

सद् बुद्धि दे भगवान (3 दफा)
सब को सद् बुद्धि दे भगवान
सब का भला करे भगवान (2 दफा)

ॐ—(15 दफा मन में बोलना)

सद्गुरु देव की जय
जगत गुरुदेव ने घणी खम्मा

गुरुदेव की प्रार्थना

जय अंतरयामी स्वामी जय अंतरयामी
पार करो शिवधामी जय अंतरयामी॥
तूं परमेश्वर सांचो वल्लभ तुं म्हारो
दुःखड़ा दूर करनारो जय अंतरयामी॥
तु ब्रह्मा तुं विष्णु कृष्ण कन्हैयो तुं
जगवंदन जिनवर तुं जय अंतरयामी॥
विश्व थकी तुं न्यारो, ब्रह्म जगवनारो
सकल जगत ने प्यारो जय अंतरयामी॥
घट घट व्यापक स्वामी नाथ निरंजन तूं
भव भंजन भयहर. तुं जय अंतरयामी॥
पुन्य प्रतापे बालक तुम शरणे आयो
अखिलपति कहेवायो जय अंतरयामी॥
निभव्या तेम निभवजो दीनबंधु दाता
अनाथ जन् गुणगाता जय अंतरयामी॥
एक मने आधारो, बालक हूं त्हारो
किंकर पार उतारो जय अंतरयामी॥

बधाई

बाजे बाजे रे बधाई आज बाजे छे .....
मारा नाथनी बधाई आज बाजे छे .....
दीनानाथनी बधाई आज बाजे छे ..... ॥

(1)

देश मरुधर ..... ग्राम मणादर, माता वसु गृह गाजे छे .....
मारा नाथनी बधाई आज बाजे छे ..... ॥

(2)

आहिर कुलमां रत्न प्रकाश्यू, तेज मणिमय ..... भासे छे .....
मारा नाथनी बधाई आज बाजे छे ..... ॥

(3)

तोला नन्दन ..... नाथ नगीना, विश्वमां डंको बाजे छे .....
मारा नाथनी बधाई आज बाजे छे ..... ॥

(4)

प्रीतम प्यारा नाथ हमारा; घोर गगन मां गाजे छे .....
मारा नाथनी बधाई आज बाजे छे ..... ॥

(5)

बालक किंकर, दास तुम्हारा, भक्तिनी भिक्षा मांगे छे .....
मारा नाथनी बधाई आज बाजे छे ..... ॥